P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# संगीतानुरागी महात्मा गांधी

**राजेश गोपालराव केलकर**
अध्यक्ष,
कंठ्य संगीत विभाग,
फैकल्टी आफ परफ़ार्मिंग आर्ट्स,
महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बरोडा,
बड़ोदरा, गुजरात, भारत

**सारांश**

भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक परंपरा में ऋषि–मुनि और संतों का ज्ञान–विज्ञान–राजनीति–कलाओं से सम्बन्ध सर्वविदित है। बल्कि मनुष्य के सर्वांगींण विकास के लिए इसे अनिवार्य भी माना गया है। ऐसी ही संत परंपरा के प्रतिनिधि के रूप में मोहनदास करमचंद गांधी 'महात्मा गाँधी' का उल्लेख आवश्यक है। आप आधुनिक समय में प्राचीन और अर्वाचीन भारत भारत की कड़ी के रूप में स्वीकृत स्वतन्त्रता सेनानी और दार्शनिक थे। संगीत और नृत्य के साथ आप के विचार और सम्बन्ध पर प्रकाश इस लेख द्वारा डालने का एक प्रयास है।

**मुख्य शब्द :** संगीत, भक्ति, महात्मा गाँधी, स्वतन्त्रता संग्राम, कांग्रेस, साबरमती आश्रम ।

**प्रस्तावना**

संगीत और नृत्य मानवता को प्रकृति की सब से श्रेष्ठ कलात्मक देन है। इस के प्रभाव से किसी भी देश या संस्कृति अछूती नहीं रही है। जहां तक भारत का प्रश्न है, इन कलाओं का हज़ारों वर्षों का लिखित इतिहास भी उपलब्ध है। इन्हें वहन करने वाले आचार्यों, गुरुओं, ऋषि मुनियों, संतों की परम्परा रही है। महात्मा गाँधी भी ऐसी ही परम्परा की एक कड़ी थे इस में कोई संदेह नहीं। उनका समग्र जीवन इस तथ्य का साक्ष्य देता है।

संस्कारी एवं शिक्षित परिवार में जन्मे महात्मा गाँधी को संगीत का धार्मिक और अध्यात्मिक प्रभाव का ज्ञान आप को अपने युवावस्था से था। आप जब दक्षिण आफ्रिका में थे तब भी अपने आश्रम में आपने दैनिक सायं प्रार्थनाओं में विविध स्तोत्र, भजन इत्यादि का समावेश किया था। इन भजनों के संग्रह को 'नीतिवान काव्यो' नामक पुस्तिका में संगृहीत किया था।

**अध्ययन का उद्देश्य**

महात्मा मोहनदास करमचंद गाँधी का भारत के आधुनिक इतिहास में एक स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में अग्रपंक्ति लिया जाता है। एक सफल वकील, कुशल नेता, दार्शनिक, समाज सेवक, लेखक इत्यादि अनेकों रूप में इन्हें कौन नहीं जानता? परन्तु भक्ति आन्दोलन के संतों की परम्परानुसार आप भी संगीत, नृत्यादि अन्यान्य कलाओं के उपासक, समर्थक एवं भक्त थे। महात्मा गाँधी और भक्तकवि नरसिंह मेहता द्वारा रचित भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहीये जे पीड पराई जाणे रे' तो मानो एक दुसरे के पर्याय के रूप में सर्वस्वीकृत है। परन्तु महात्मा गाँधी ने अपने दैनिक जीवन में, स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में, समाज सेवा कार्यों में किस प्रकार संगीत कला को पिरोया और अप्रत्यक्ष रूप से संगीत कला की किस प्रकार से सेवा की, यह जानना भी रोचक–दिलचस्प अवश्य होगा। इस लेखन में यह हेतु सिद्ध होता है।

**साबरमती आश्रम एवं संगीत**

सारे विश्व में भारतीय संगीत एवं अध्यात्म का सन्देश देने का काम 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिये' यह भक्त नरसिंह मेहता के द्वारा रचित भजन के जरिये भी हो पाया जो की महात्मा गाँधी का सर्वाधिक प्रिय भजन है। यहाँ इस बात का उल्लेख करना अत्यावश्यक है की इस भजन की राग खमाज पर आधारित धुन स्वयं पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी के वरिष्ठ शिष्य पं नारायण मोरेश्वर खरे ने बनायी थी। पं खरे जी गाँधी जी के साबरमती आश्रम में संगीत शिक्षक के रूप में अपने अंत तक सेवारत रहे। पं नारायण मोरेश्वर खरे ने ही विभिन्न भाषाओं के भजन 'आश्रम भजनावली' के रूप में संकलित किये थे। महात्मा गाँधी का पूर्ण विश्वास था की संगीत अध्यात्म का सशक्त माध्यम है। इसी सन्दर्भ में उन्होंने पं नारायण मोरेश्वर खरे को ७ अक्तूबर, १९२४ को लिखे हुए पत्र में यह लिखा है की, "मैं धीरे–धीरे आध्यात्मिक विकास के साधन के रूप में संगीत को देख पा रहा हूं। कृपया यह देखने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें कि हम हमारे "भजनों" को उनके अर्थ सही तरह से समझ कर गाते हैं। मुझे

उस से जो आनंद मिलता है उसका वर्णन नहीं कर सकता। संगीत एक रचनात्मक एवं सर्जनात्मक प्रवृत्ति है, सकारात्मक प्रवृत्ति है जो आत्मा का उत्थान करती है।" उन्होंने हमेशा इस कला को पुनर्जीवित करने और संगीत के स्कूल को संरक्षित करने की कोशिश की। साबरमती आश्रम या अन्य भारतभर में कहीं भी आप रहते थे तो प्रार्थना सभा में 'सामूहिक प्रार्थना एवं गायन' को बड़ा महत्त्व दिया था। विशेष कर के साबरमती आश्रम के लिए गांधी जी के अनुरोध पर पंडित विष्णु दिगंबर जी ने अपने प्रमुख शिष्य पंडित नारायण मोरेश्वर खरे को नियुक्त किया। पंडित खरे जी ने 'आश्रम भजनावली' के लिए भजनों को ना केवल संगृहीत किया पर उनकी धुनें भी बनायी। इस 'आश्रम भजनावली' में विभिन्न सम्प्रदायों के प्रातिनिधिक भजन एवं प्रार्थनाए इत्यादि का संग्रह है। आप की प्रार्थना सभाओं में भक्तकवि नरसिंह मेहता का विख्यात भजन 'वैष्णव जन तो तेने कहिये', 'रघुपति राघव राजाराम', बंकिमचंद्र जी का 'वन्दे मातरम', गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टेगोर का 'जन गन मन' कुछ 'सर्व धर्म समभाव प्रार्थना' इत्यादि का विशेष गायन नियमित रूप से होता था।

**कोंग्रेस के अधिवेशन एवं दांडी यात्रा**

महात्मा जी ने कोंग्रेस के अधिवेशनों के दौरान पंडित विष्णु दिगंबर जी से गायन करवाने की बात सर्वविदित है। महात्माजी की राग मिश्र गारा पर आधारित लोकप्रिय धुन 'रघुपति राघव राजाराम' पंडित विष्णु दिगंबर जी द्वारा रचित थी। महात्मा गाँधी संगीत को अध्यात्म का श्रेष्ठ संवाहक मानते थे।

आधुनिक भारतीय संगीत के पुनरोद्धारक पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी का स्वाभिमान, राष्ट्रप्रेम इत्यादि से सभी संगीतप्रेमी परिचित है। संगीत का उपयोग राष्ट्रोत्थान में कैसे हो सकता है और इसका प्रभावी उपयोग समाज में कैसे हो सकता है इसका उन्हें भली भाँती ज्ञान था। इसकी जानकारी हमें उनकी जीवनी से मिल सकती है। एनी बेसंट और गोपाल कृष्ण गोखले की तरह महात्मा गाँधी भी आपके संगीत से और राष्ट्रप्रेम से बेहद प्रभावित थे। यह सर्वविदित है की पंडित विष्णु दिगंबर जी द्वारा बनायीं गयी राग मिश्र गारा में निबद्ध 'रघुपति राघव राजाराम' इस धुन को महात्मा गाँधी बेहद पसंद करते थे। महात्मा गाँधी की १९३० की प्रसिद्ध दांडी यात्रा में इसी धुन के साथ सारे देशभक्त अग्रेसर हुए थे। गांधी जी की बिहार यात्रा में भी यह धुन काफी लोकप्रिय हुई थी। इंडियन नॅशनल कोंग्रेस के अधिवेशनों में तो स्वयं पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी ने 'रघुपति राघव राजाराम' और 'वन्दे मातरम' का गायन करने का उल्लेख मिलता है। बिहार की यात्रा के दौरान मनुबहन ने 'रघुपति राघव' इस धुन में 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम' यह पंक्ति भी जोड़ दी। आगे चल कर गांधी जी ने भी अपनी प्रार्थना सभाओं में इस पंक्ति को भी गाने का आग्रह रखा।

विख्यात लेखिका श्रीमती मृणाल पांडे लिखती है की, गांधी जी मानते थी की कविता–साहित्य, संगीत तथा अन्यान्य कलाएं 'स्वराज्य' की अवधारणा का अभिन्न अंग था। आप यहाँ तक मानते थे की चरखे की लय और ध्वनि में संगीत बसा हुआ है। गांधी जी मानते थे की जैसे स्वरों में संवादिता आने से मधुर संगीत की निर्मिती होती है ठीक वैसे ही 'स्वराज्य' में जनता की आवाज एक होने से समाज में सामंजस्य हार्मनी आती है, यह विचार आपने अहमदाबाद में २१ मार्च १९२६ को आयोजित 'राष्ट्रीय संगीत मंडल' के द्वितीय वार्षिक सम्मेलन में रखे थे।

गाँधी जी के सेक्रेटरी प्यारेलाल नय्यर जी ने १९२५ में अपनी डायरी में लिखा है की गांधी जी के चरखा चलाते समय कुछ बंगाली संगीतकारों ने उनके चरखा चलाते समय सितार बजाने का प्रस्ताव रखा जिसे गाँधी जी ने स्वीकार किया। परन्तु वह दिन गाँधी जी का मौन व्रत का था, पर उन्होंने सितार वादन सुना। बाद में उन्होंने लिखा की उस दिन मैं ने चरखे से जो सूत काँता था वह संगीत के प्रभाव के कारण सब से उत्तम गुणवत्ता का था।

संगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग होने के कारण गांधी जी संगीत की साधना और सेवा करने वाले सभी समुदाय को सम्मान देते थे। आपने तवायफों को भी सम्मान की दृष्टि से देखा। बदले में कहते है की १९२० में काशी प्रवास के दौरान संगीत की साधिकाएँ ऐसी तवायफों के संघ ने भी विख्यात गायिका विद्याधरी बाई के नेतृत्व में गाँधी जी के 'स्वराज फंड' में आर्थिक सहयोग दिया। गांधी जी के अनुरोध पर कलकत्ते की विख्यात गायिका गौहरजान ने भी 'स्वराज फंड' में योगदान देने के लिए विशेष कार्यक्रम किया।

गाँधी जी शान्तिनिकेतन में गुरुदेव रबिन्द्रनाथ टेगोर की प्रवृत्तियाँ और विशेष कर कविता और संगीत से काफी प्रभावित थे। उन्होंने आग्रह रखा की वहां की संगीत शिक्षा में न केवल बांगला गान या टेगोर संगीत हो परन्तु हिन्दू–मुस्लिम गीत संगीतकार तथा पाश्चात्य संगीत कला का भी ज्ञान दिया जाए। इस विषय पर उनकी रबिन्द्रनाथ टेगोर से काफी चर्चा का भी उल्लेख मिलता है। बाद में रबिन्द्रनाथ ने गांधी जी के सुझावों का स्वीकार भी किया था। शिक्षा क्षेत्र में संगीत के महत्त्व पर भी आप का विशेष जोर था। २० अक्तूबर, १९१७ के दिन द्वितीय गुजरात शैक्षिक सम्मलेन में भरूच में आपके वक्तव्य में संगीत के समूह गान, समूह शिक्षा के ऊपर विशेष जोर दिया। यहाँ तक कहा हरेक राजकीय सम्मलेन में संगीतकारों द्वारा कार्यकर्ताओं को समूह में संगीत शिक्षा दिलवाने के लिए नियुक्त किये जाने की भी बात कही। १५ अप्रैल, १९२६ के दिन अहमदाबाद में संबोधित करते हुए आपने यह कहा की "अगर संगीत के व्यापक अर्थ को समझे तो संयोजन, सामंजस्य, संवाद, परस्पर सहयोग ही है। इसे ध्यान में रखकर अगर अपने बच्चों को संगीत सिखने पर प्रोत्साहित करें तो देश की बड़ी सेवा हो सकती है। "

भारतरत्न एम्. एस. शुभलक्ष्मी को सन १९४७ में एक सन्देश में 'हरी तुम हरो जन की भीर' भजन रिकार्ड करने के लिए कहा। जवाब में शुभलक्ष्मी के पति सदाशिवन ने कहा की शुभलक्ष्मी को यह भजन नहीं आता अतः उसे न्याय नहीं दे पाएगी। महात्मा ने फिर से सन्देश भेजा और कहा की शुभलक्ष्मी चाहे भजन के शब्द बोलकर ही रिकार्ड कर के भेज दें, फिर भी वह दूसरों से अधिक सुरीला और भावपूर्ण होगा। तुरंत शुभलक्ष्मी ने रातोरात

उसे रिकार्ड करवा कर गाँधी जी को भेज दिया। कुछ ही दिनों के बाद गाँधी हत्या के समाचार सुनकर शुभलक्ष्मी काफी दुखी हुई। वाकई गाँधी जी की पसन्द एवं संगीत प्रेम अनूठा था। काम की व्यस्तता के कारण किसी ने उन्हें पूछा की आप को शायद संगीत पसंद नहीं है। गाँधी जी का उत्तर था, "अगर मेरे जीवन में संगीत और हास्य न होता तो काम के भार से मैं कब का ख़त्म हो जाता। "एक तरह से देखा जाए तो संगीत कला संतुलन, लय, प्रमाणबद्धता से सम्बंधित है, ठीक कुछ वैसे ही महात्मा गाँधी जी का जीवन था यह कहना गलत नहीं होगा। आप के जीवन में शांति, स्वरों की हार्मनी की तरह सामाजिक समरसता का सन्देश था। क्यूँ की उनका जीवन ही समरस और लयबद्ध था। दैनिक चर्या की शुरुआत और अंत दोनों मधुर प्रार्थनाओं और भजनों से होता था।

**निष्कर्ष**

गाँधी जी ने संगीत को आध्यात्मिक उन्नति के अलावा सामाजिक जागृति और राष्ट्रीय एकता के लिए प्रभावी माध्यम के रूप में देखा। गांधी जी का शांति और सद्भावना से परिपूर्ण जीवन मानों संगीत कला का ही प्रतिबिम्ब था। उनके पूरे जीवन में एक सुनिश्चित अनुशासित लय, संवादिता थी जिसके कारण आप महात्मा कहलाये। सामाजिक अशांति और अस्वस्थता के वैश्विक वातावरण में मानवता के लिए गाँधी जी कला एवं संगीत की फिलोसोफी आज भी संगीत के विद्यार्थिओं और गाँधी विचारधारा के लिए आदर्शरूप है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

*Bakhale, J. 'Two men and Music', OUP, USA, 2005.*

*Pradhan, A. , 'Hindustani Music: Ways of listening', Bookbaby, 2016.*

*Pandey, M. 'Mahatma Gandhi found refuge in music', an article published in 'National Herald' on 30th September, 2018.*

*The Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol . 83, pg . 410 .*

*The Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol . 82, pg . 250-251 .*

*Young India, 1.04.1926: The Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol.30, pg. 160 .*

*Young India,8.9.1920, The Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol.18, pg.241-242. Speaking on Democracy 'Versus' Mobocracy.*

*https://www.thehindu.com/society/history-and-culture/the-mahatma-and-music/article25122493.ece Website visited as on 18th October, 2018 at 9.00pm.*

*https://gandhiking.ning.com/profiles/blogs/narayan-moreshwar-khare-and-mahatma-gandhi-1 Website visited as on 17th October, 2018 at 8.00pm.*